M.J.M.C Part 2

Paper- Communication Research

Topic-- Concept of Research

Prepared by :DR. KAVITA RAJ

व्यक्ति की विशेषता रही है कि वह अपने चारों विद्यमान वातावरण को समझने का प्रयास करता है एवं इसी के परिणाम स्वरूप से अनुसंधान कार्य करना होता है ताकि वह अपनी अनुभूत आवश्यकता की पूर्ति कर सके। वस्तुत: अनुसंधान या शोध अंग्रेजी भाषा के रिसर्च (Research)का हिंदी रूपांतरण है जो वास्तव में फ्रांसीसी भाषा के शब्द Recherche से बना है जिसका अर्थ है ,देखना ,खोज करना ,सब दिशाओं में जाना आदि। इस प्रकार अनुसंधान का अर्थ हुआ ज्ञान की खोज करना। इस अर्थ में शोध शब्द का व्यवहार सबसे पहले ऐतिहासिक अनुसंधान के प्रसंग में किया गया। इसी क्रम में सामाजिक अनुसंधान सामाजिक यथार्थ यानी social reality को समझने की प्रक्रिया है ।यह सामाजिक अध्ययन का एक सामूहिक प्रयास होता है जिसके द्वारा सामाजिक घटना, व्यवहार, सामाजिक तत्वों की खोज की जाती है ।

इसी प्रकार वैज्ञानिक शोध ,शोध का वह दृष्टिकोण है जिसमें वैज्ञानिक विधियों द्वारा नए ज्ञान की खोज की जाती है ।वैज्ञानिक शोध अनुसंधान तक सीमित नहीं रहता बल्कि उसका संबंध भूत वर्तमान तथा भविष्य से है। मनोविज्ञान

,समाजशास्त्र तथा शिक्षा ऐसी व्यवहारपरक विज्ञान है जिसमें वैज्ञानिक विधियों द्वारा शोध की जाती है ।शोध के लिए मूल रूप में निम्नलिखित आवश्यकताएं होती है :-

१. इसमें नवीन तथ्य खोजें जाने चाहिए

२. तथ्यों तथा सिद्धांतों की नवीन व्याख्या होनी चाहिए

३.वैज्ञानिक आधार पर सुविचारित होने चाहिए ।

वस्तुत: नवीन अनुमानों, प्रयोग, प्रमाणों के द्वारा तथ्यों में निहित सत्यों को विदित बनाने की प्रक्रिया ही रिसर्च कहलाती है।

शोध विषय अलग-अलग विधाओं और शाखाओं से संबद्ध होने के कारण अनेक प्रकार के तथ्यों को उजागर करता है ।तथ्य एक ऐसी स्थिति है जो प्रत्यक्ष विद्यमान है ।साथ ही सत्य उस विद्यमानता में छिपा हुआ मूलभूत तत्व होता है जिसका सही और सटीक रूप जानना ही शोध का लक्ष्य होता है । शोधार्थी उन अनेक तथ्यों में से विषय की उपयोगिता और प्रमाणिकता के मापदंड पर पूरा उतरने वाले तथ्यों को ही चयनित करता है। इसके बाद तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या करते हुए मूलभूत सत्य को खोजने का उपक्रम करता है ,इस पूरी प्रक्रिया में शोधकर्ता को अनुमान ,कल्पना,तर्क, प्रयोग आदि का आश्रय लेना पड़ता है। तत्वों का वर्गीकरण सुव्यवस्थित मीमांसा, विश्लेषण आदि इस प्रकार के अध्ययन के अनसुलझे तत्व है ।

परिभाषाएं:---

The new century dictionary के अनुसार "सामाजिक अनुसंधान का अर्थ किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के विषय में विशेष रूप से सावधानी के साथ खोज करना ,तथ्यों अथवा सिद्धांतों का अन्वेषण करने के लिए विषय सामग्री की निरंतर सावधानी पूर्ण पूछताछ अथवा पड़ताल करना है।

Encyclopaedia of social sciences में लिखा है कि "अनुसंधान वस्तुओं प्रत्ययों और संकेतों आदि को कुशलता पूर्वक व्यवस्थित करता है, जिसका उद्देश्य समानीकरण द्वारा विज्ञान का विकास ,परिमार्जन अथवा सत्यापन होता है चाहे वह ज्ञान व्यवहार में सहायक हो अथवा कला में।"

The survey methods insocial investigation में लिखा है कि" सामाजिक घटनाओं तथा समस्याओं के संबंध में नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए की गई व्यवस्थित छानबीन तथा पूछताछ को ही हम सामाजिक अनुसंधान कहते हैं।

श्रीमती पी वी यंग ने लिखा है कि सामाजिक अनुसंधान के अंतर्गत विशुद्ध अनुसंधान भी सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है। क्योंकि यह जांच किए जाने योग्य ऐसे तथ्यों और मूलभूत सिद्धांतों को पृष्ठभूमि प्रदान करता है जिसका प्रयोग करते हुए सामाजिक क्रिया के कार्यक्रम का निर्माण किया जा सकता है।

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषा उसे स्पष्ट है कि अनुसंधान की प्रकृति में मूल बात यह है कि यह सामाजिक यथार्थ से अंतर संबंधित प्रक्रियाओं की व्यवस्थित

खोज तथा विश्लेषण की एक वैज्ञानिक पद्धति है अतः अनिवार्यत: इसकी प्रकृति वैज्ञानिक है ।सामाजिक अनुसंधान में वैज्ञानिक ढंग के द्वारा अनुसंधानकर्ता अपने अध्ययन को आयोजित करता है। अनुसंधानकर्ता वस्तुनिष्ठ सामाजिक घटनाओं का अध्ययन प्रारंभ करता है ।वैज्ञानिक विधि के द्वारा आंकड़ों का एकत्रीकरण करता है और वस्तुओं और घटनाओं की संपूर्णता को ध्यान में रखते हुए भी उनकी निर्णायक इकाइयों का अध्ययन विशिष्ट दृष्टिकोण से करता है।